

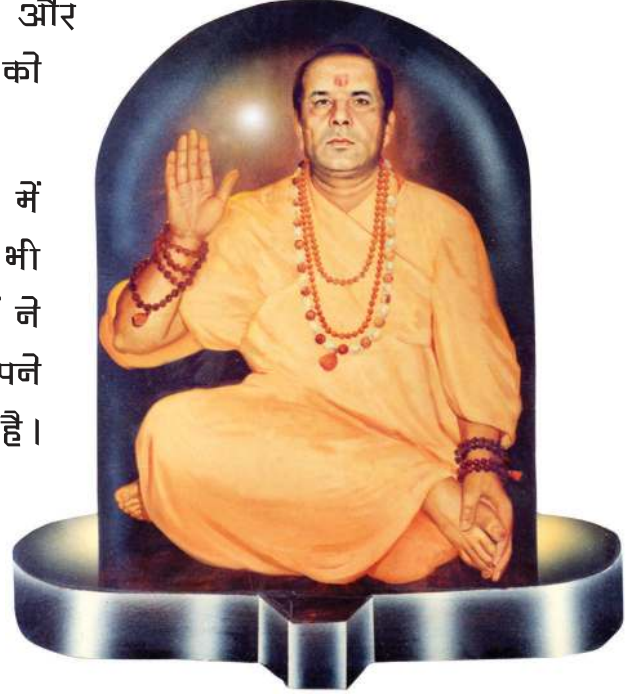


- ☆ अगर ज्ञान के पुंज को प्राप्त करना है, तो तुम्हें गुरु की एक-एक कसौटी को झेलने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। गुरु प्रहार करे तो उसे तुमको सहन करना ही पड़ेगा और तुम्हें मुस्कराना ही पड़ेगा, फिर भी श्रद्धा व्यक्त करनी ही पड़ेगी - मन से, हृदय से, प्राणों से।
- ☆ गुरु को चाहिये कि वह तुम्हें पादपद्म नहीं बनने दे, तुम चाहे कितनी भी आरजू करो, मिन्नत करो, चापलूसी करो, तुम चाहे कितने ही पांव पसारो पर यदि गुरु सतर्क है तो तुम पर प्रहार करें और देखें, तुम्हें टैस्ट करें, बार-बार करें।
- ☆ शंकराचार्य ने बहुत पहले ही पादपद्म को वह गुरुतर ज्ञान दे दिया, जबकि उसका अहम् तोड़ा ही नहीं था और जब अहम् तोड़ा तो उसके मन में यह आ गया, कि मुझको अब शंकराचार्य बन जाना चाहिये और मैं शंकराचार्य तब बन सकता हूँ जब इनकी हत्या कर दूंगा। इतना जघन्य अपराध इसलिये हुआ क्योंकि उसका अहम् गला नहीं, उसके खून में गन्दगी बनी रही। यह शंकराचार्य की न्यूनता



थी, यह शंकराचार्य की गलती थी, और उस गलती का परिणाम शंकराचार्य को भुगतना पड़ा।

☆ इतिहास उठाकर देख लें, इतिहास में ये गलतियां हुई हैं, गुरुओं ने भी यदाकदा गलतियां की हैं और शिष्यों ने उन गलतियों का लाभ उठाते हुए अपने आप को पतन के रास्ते पर डाला है। पर मैं वह गलती नहीं करूंगा जो बुद्ध ने कर दी, महावीर ने कर दी, जो शंकराचार्य ने कर दी।



☆ इसलिए गुरु को चाहिए कि वह पादपद्म नहीं पैदा करे और शिष्य को चाहिये कि वह विवेकानन्द बने, उसके पास सेवा हो, श्रद्धा हो।

☆ अगर तुम्हारी गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं है तो व्यर्थ है, अगर तुम में सेवा करने की क्षमता नहीं है तब भी व्यर्थ है और यदि श्रद्धा कर भी रहे हो, सेवा कर भी रहे हो तो तुम कोई एहसान नहीं कर रहे हो गुरु पर।

☆ ... और यदि आप श्रद्धा देते हैं, सेवा करते हैं, तो गुरु उस ऋण को अपने ऊपर नहीं रख सकता। कोई भी गुरु शिष्य का ऋणी नहीं होना चाहता, परन्तु गुरु की यह विवशता होती है कि शिष्य को तब तक वह पूर्णता नहीं दे सकता, जब तक कि उसका अहम् पूरी तरह गल नहीं जाता। तब तक सेवा के उस ऋण को गुरु को धारण करना पड़ता है, न चाहते हुए भी शिष्य के ही कल्याण के लिए गुरु को ऋण देना पड़ता है।

☆ ... परन्तु जिस क्षण अहम् गल जाता है, शिष्य पूर्णता प्राप्त कर लेता है और गुरु भी ऋण से मुक्त हो जाता है।

